का कल्याण होगा और देश की आर्थिक प्रगति होगी । अगर हम ऐसा नहीं कर पाये, तो फिर यह कहना बडा मुश्किल हो जायेगा कि यह देश की जनता का बजट है ।

सभी मानते हैं कि अभी तक हमारे देश की अर्थ-व्यवस्था कृषि पर आधारित है और हमारी कृषि अभी तक प्रकृति और मौसम की कृपा पर आधारित है । खेद की बात है कि हम अभी तक कृषि को अपने विकास की गति पर आधारित नहीं कर पाये हैं । यदि हम इसी प्रकार प्रकृति और मौसम पर आधारित रहेंगे और कृषि को उस पर आधारित रखेंगे और यह सोचेंगे कि हमारा अर्थ-तन्त्र इसी प्रकार प्रगति करेगा, तो मैं समझता हूं कि हम कभी भी निश्चिन्त अवस्था में नहीं जा सकेंगे ।

अगर देश की अर्थ-व्यवस्था की दृष्टि से निश्चित होना है तो हम मौसम और प्रकृति की कृपा पर निश्चित नहीं हो सकते । फिर तो हमें अपना बजट भी और अपने आंकड़े भी और अपनी सारी जो विचारधारा है वह प्रकृति के ही भरोसे करनी पड़ेगी । उसमें मानव की सरकार की और हमारे समाज की जो कर्त्तव्यता है उसका कितना भाग हो उसके लिये आवश्यक है कि हम यह देखें कि प्रकृति क्या करती है, मौसम क्या करता है और हम क्या कर रहे हैं ? जब हम यह सोच पाएंगे हम यह तय कर पाएंगे कि हम क्या कर रहे है तब हम यह समझ सकेंगे कि हम उत्पादन की दिशा में निश्चित प्रगति कर रहे हैं और उत्पादन की दृष्टि से हम निश्चित हो सकते है । इसीलिए मेरा कहना यह है कि कृषि के संबंध में हमें यह सोचना होगा कि हम कृषि को विकास पर आधारित करें और कृषि पर आधारित जो व्यवस्था है अगर विकास पर कृषि आधारित होगी .....

MR. DEPUTY SPEAKER : The Hon. Member may continue his speech tomorrow.

BUSINESS ADVISORY COMMITTEE

FORTY-SIXTH REPORT

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AN SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI RAGHU RAMAIAH) : Sir, I beg to present the Forty-Sixth Report of the Business Advisory Committee.

19.02 hrs.

The Lok Sabha adjourned till Eleven of the Clock on Friday, March 13, 1970/Phalguna 22, 1891 (Saka).

NAI DUNIA PRESS, INDORE. 1010—7-1970